प्रातःक्लास 2.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझा रहे हैं। पढ़ाई माना समझ। तुम बच्चे समझते हो वह पढ़ाई बहुत सहज और बहुत ऊँची है और बहुत ऊँच पद भी देने वाली है। यह सिर्फ़ तुम बच्चे ही जानते हो। यह पढ़ाई हम विश्व का मालिक बनने लिए पढ़ते हैं। तो पढ़ने वालों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कितनी ऊँची पढ़ाई है। यह वही गीता का एपीसोड है। संगमयुग भी है। तुम बच्चे जागे हो बाकी सभी सोये पड़े हैं। गायन भी है माया की नींद में सोये पड़े हैं। तुमको बाप ने आकर जगाया है। सिर्फ़ एक बात पर समझाते हैं मीठे बच्चों याद की यात्रा की बल से अपने विश्व पर राज्य करो। जैसे कल्प पहले भी किया था। यह स्मृति बाप दिलाते हैं। बच्चे भी समझते हैं हमने स्मृति पाई। कल्प–2 हम इस योगबल से विश्व के मालिक बनते हैं और फिर दैवीगुण भी धारण करनी होती है। याद पर ही मुख्य अटेन्शन देना है; इसलिए योगबल से तुम बच्चों में ऑटोमेटिकली दैवीगुण आ जाती है। बरोबर यह इम्तहान है ही मनुष्य से देवता बनने का। तुम यहां आये ही हो मनुष्य से देवता बनने लिए योगबल से। और स(य)ह भी समझते हो योगबल से सारे विश्व को पवित्र होना है। पवित्र थी। फिर अपवित्र बनी है। सारे चक्र के राज़ को तुम बच्चों ने समझा है। और दिल में भी है। भल कोई नया हो, तो भी यह बातें बिल्कुल सहज हो समझने की। तुम सो देवता पूज्य थे , फिर पुजारी तमोप्रधान बने हो। और कोई ऐसा बता भी न सके। मनुष्य तो लम्बी–चौड़ी गपोड़े लगाते हैं। शास्त्रों में भी बहुत गपोड़े हैं। बाप क्लीयर समझाते हैं वह है भक्तिमार्ग, यह है ज्ञान मार्ग। भक्ति पास्ट हो गई। पास्ट की बात को चितवो नहीं। वह तो गिरने की बातें हैं। बाप तो अभी चढ़ने की बातें सुना रहे हैं। बच्चे भी अच्छी रीत समझते हैं। हमको दैवीगुण ज़रूर धारण करनी है। रोज़ का चार्ट लिखना चाहिए। हम कितना समय याद में रहे, हमने क्या–2 भूलें की। भूल की फिर भारी चोट भी लगती है। उस पढ़ाई में भी कैरेक्टर्स देखी जाती है ना। इसमें भी कैरेक्टर्स देखी जाती है। बाबा तो तुम्हारे कल्याण के लिए ही करते हैं। उसमें भी रजिस्टर रखते हैं पढ़ाई का और कैरेक्टर्स का। यहां भी बच्चों को देवर(दैवी) कैरेक्टर्स बनाना है। भूलों की सम्भाल करनी है। देखना है मेरे से कोई भूल तो नहीं हुई। इसलिए यहां कचहरी भी होती है। और कोई स्कूल आदि में कब कचहड़ी नहीं होती। अपने ही अन्दर से पूछना है। बाप ने समझाया है माया के कारण कुछ न कुछ अवज्ञाएं, चोरी–चकारी आदि की भूलें होती रहती हैं। तुम बच्चों की कचहड़ी शुरू में भी होती थी। बच्चे सच्च–2 बताते थे। बाप समझाते रहते हैं अगर सच्च न बताया तो फिर वह भूलें वृद्धि को पाती रहेंगी। उल्टा और ही भूल का डण्ड मिल जावेगा। भूलें न बतलाने से फिर नाफरमानबरदारी का टीका लग जाता है। फिर राजाई का तिलक मिल न सके। आज्ञा नहीं मानते हैं, बेवफा बनते हैं तो राजाई पा नहीं सकते। सर्जन भिन्न–2 प्रकार से समझाते रहते हैं। सर्जन से अगर बीमारी छिपा....तो फिर सफ़ा कैसे मिलेगी? माया कुछ न कुछ भूलें करा देती हैं ; इसलिए सर्जन को तो फौरन बताना चाहिए। बाप तो हर बात समझाते रहते हैं। ऐसी–2 माया बहुत तूफान लावगी। एकदम पौं बारह कर माया उल्टा माथा कर देती है। कोई न कोई भ(भू) ल करा देती है। यहां तुम बैठे हो फुल पास होन(ने) लिए; परन्तु माया तुमको बनने नहीं देती है। सर्जन से जितना छिपावेंगे तो पद भी कम हो जावेगा। सर्जन को बतलाने से कोई मार तो नहीं पड़ती है। बाप ज़रूर कहेंगे सावधान। फिर अगर ऐसी–2 भूलें करेंगे तो नुकसान को पाते रहेंगे। (पद) भी कम हो जावेगा। यह भी अभी पता पड़ा है। जन्म–जन्मांतर की बेहद की बादशाही अभी मिलती है बाप द्वारा। यह अभी मालूम हुआ है। वहां तो यह पता नहीं पड़ेगा कि अविनाशी बाप से यह अविनाशी पद पाया है। वहां तो नैचुरल दैवी चाल ही चलेंगे। यहां पुरुषार्थ करना है। घड़ी फेल नहीं होना है। बाप कहते हैं बच्चे भूलें जास्ती न करो। बाप बहुत ही प्यार का सागर है। बच्चों को बनना है। यथा बाप तथा बच्चे। य(था) राजा–रानी तथा प्रजा। बाबा तो राजा–रानी है नहीं। तुम राजा–रानी हो। बाबा हमको आप समान बनाते हैं। बाप की जो महिमा करते हो, तुम्हारी भी होनी चाहिए। बाप समान बनना है। माया बड़ी प्रबल है। तु(मको)

रजिस्टर रखने नहीं देती। माया के फीते में तुम पूरे फंसे हुये हो। छोड़ती नहीं। माया की जेल से तुम (नि)कल सकते हो। सच्च बताते नहीं। नहीं तो बाप कहते हैं एक्युरेट याद का चार्ट रखो। सुबह भी उठकर बाप को याद करो। बाप की ही महिमा करो। बाबा आप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं तो हम आपकी महिमा क्यों नहीं करें? भक्तिमार्ग में कितनी महिमा गाते हैं। उनको तो कुछ भी पता नहीं। देवताओं की तो महिमा है नहीं। महिमा तो तुम ब्राह्मणों की है। सभी को सद्गति देने वाला एक बाप ही है। वह क्रियटर है तो डायरैक्टर भी है। सर्विस भी करते हैं। बच्चों को समझाते हैं। प्रैक्टिकल में कहते हैं। वह तो सिर्फ़ भगवानुवाचः सुनते रहते थे शास्त्रों में। अभी तुम जो प्रैक्टिकल में सुनते हो वह फिर शास्त्रों में डालते हैं। बाकी शास्त्रों में सच्च तो है नहीं। गीता पढ़ते आते हैं फिर उससे मिलता क्या है? कितना प्रेम से बैठ पढ़ते हैं। भक्ति करते हैं। पता नहीं पड़ता कि इनसे क्या होगा। यह समझते नहीं कि हम तो सीढ़ी नीचे ही उतरते रहते हैं। दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान बनना ही है। ड्रामा में नूँध ही ऐसी है। इस सीढ़ी का राज़ सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। शिवबाबा ही ब्रह्मा द्वारा समझाते हैं। यह भी उनसे समझकर फिर तुमको समझाते हैं। जैसे तुम औरों को समझाते हो। मूल बड़ा सर्जन, बड़ा टीचर तो बाप है ना। उनको ही याद करना है। यह ऐसे नहीं कहते कि ब्राह्मणी को याद करो। याद तो एक की ही रखनी है। कब भी कोई साथ मोह न रखना है। एक बाप से ही शिक्षा पानी है। निर्मोही बनना है। (इ)समें बड़ी मेहनत है। सारी दुनियां से वैराग्य। यह तो ख़तम हुये पड़े हैं। इनमें लव वा आसक्ति कुछ नहीं है। कितने बड़े–2 मकान बनाते हैं। उन्हों को तो यह पता नहीं है यह पुरानी दुनियां बाकी कितना समय है। तुम बच्चे अभी जागे हो। औरों को भी जगाते हो। बाप कहते हैं अभी जागो। आत्माओं को ही जगाते हैं। घड़ी–2 कहते हैं अपन को आत्मा समझो। शरीर समझते हो तो जैसे सोये पड़े हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित मिलता है। आत्मा पावन है तो शरीर भी पावन मिलता है। बाप समझाते हैं तुम ही इस देवी–देवता घराणे के थे ,फिर तुम ही बन जावेंगे। कितना सहज है। ऐसे बेहद के बाप को क्यों नहीं याद करेंगे? सवेरे सुबह को भी उठकर बैठ बाप को याद करो। बाबा, आपकी तो कमाल है। आप हमको कितना ऊँच देवी–देवता बनाते हो। हमको बनाकर फिर आप निर्वाणधाम में बैठ जाते हो। इतना ऊँच तो और कोई बना न सके। आप कितना सहज कर बतलाते हैं। बाप कहते हैं जितना टाइम (मि)ले काम–काज करते हुये भी तुम बाप को याद कर सकते हो। बाबा ही तुम्हारा बेड़ा पार करने वाला है। कलियुग वैश्यालय से उस पार सतयुगी शिवालय में ले जाते हैं। शिवालय को भी याद करना है। शिवबाबा का स्थापना किया हुआ स्वर्ग। तो दोनों की याद आ जाती है। शिवबाबा को याद करने से हम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। यह पढ़ाई है ही नई दुनियां के लिए। बाप नई दुनियां स्थापन करने आते हैं। ज़रूर बाप आकर कोई तो कर्तव्य करेंगे ना। तुम देखते भी हो मैं पार्ट बजा रहा हूं। ड्रामा के प्लैन अनुसार। तुम बच्चों को 5000 वर्ष पहले वाली याद की यात्रा और सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान सुनाता हूं। तुम भी समझते हो बाप हर 5000 वर्ष बाद सम्मुख आते हैं। आत्मा ही बोलती है। शरीर तो नहीं बोलेगी। बाप बच्चों को बैठ शिक्षा देते हैं। आत्मा को पवित्र बनाना है। आत्मा को प्योर होना एक बार ही होना है। आत्मा ही सतोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान बनना है। बाप कहते हैं मैंने अनेक बार तुमको पढ़ाया है। फिर पढ़ावेंगे। ऐसे और कोई सन्यासी आदि कह न सके बाप ही कहते हैं बच्चों मैं ड्रामा प्लैन अनुसार पढ़ाने आता हूं। फिर 5000 वर्ष बाद आकर ऐसे ही पढ़ाऊँगा। जैसे कल्प पहले तुमको पढ़ाकर राजधानी स्थापन की थी। अनेक बार पढ़ाकर तुमको राजधानी दी है। यह कोई नई बात नहीं। कितना बार तुम पढ़े हो। यह कैसी वण्डरफुल बातें बाप सुनाते हैं। श्रीमत–श्रीमत–श्रीमत। कितनी श्रेष्ठ है। ऊँच ते ऊँच बाप ही है। उनके श्रीमत से हम श्रेष्ठ अथवा विश्व का मालिक बनते हैं। बहुत–2 बड़ा

मर्तबा है। कोई–कोई को बड़ा लॉटरी देख माथ(ा) ही ख़राब हो जाता है। होपलेस हो जाते हैं। हम नहीं चढ़ सकते। हम विश्व की बादशाही कैसे लेंगे? तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं अतिइन्द्रिय सुख, खुशी की बात इन्होंने(इन्हों) से पूछो। तुम जहां भी जाते हो खुशी की ही बातें सुनाते हो। तुम ही (ि)वश्व के मालिक थे, फिर 84 जन्म भोग गुलाम बन गये हो। गाते हैं ना मैं गुलाम,मैं गुलाम तेरा। समझते हैं अपन को नीच कहना (ठंडा) हो चलना है। देखो बाप कौन है उनको कोई भी नहीं जानते नहीं हैं। अभी तुमने जाना है। बाप कैसे आकर बच्चा–2 कहकर समझाते हैं। हमारी आत्मा को कहते हैं। आत्मा को बाप को याद करना है। यह आत्माएं और परमात्मा को(का) मेला है। उनसे ही स्वर्ग की बादशाही मिलती है। बाकी गंगा स्नान से कोई स्वर्ग की बादशाही थोड़े ही मिलती है। गंगा स्नान तो बहुत बारी किया है। यूं तो पानी सारा सागर से ही आता है। कई अनपढ़े बच्चों को यह भी पता नहीं है। कैसे यह सभी चलता है, बरसात कैसे पड़ती है। यह भी कुदरत ठहरी ना। तो इस समय तुमको बाप सभी समझाते रहते हैं। कैसी कुदरत है। तो बाप आत्माओं को सुनाते हैं। धारणा भी आत्मा में ही होगी, न कि शरीर में। तुमको भक्तिमार्ग उल्टा लटकाये एकदम उल्लू बना दिया है। अभी बाबा ने समझाया है तुम भी फ़ील करते हो हमको माया ने एकदम उल्टा लटकाय दिया था। कितने बेसमझ बन जाते हैं। बाप हमको क्या से क्या बना देते हैं। अभी बाप कहते हैं अपन पर रहम करो। बाप की अवज्ञा न करो। देह अभिमानी मत बनो। मुफ़्त अपना पद कम कर देंगे। टीचर तो समझावेंगे। जानते हैं मैं बेहद का टीचर हूं। दुनियां में भाषाएं भी कितने हैं। कोई चीज़ छपती है तो सभी भाषाओं में छपाने का किया जाता है। कोई भी कुछ लिट्रेचर आदि छपाते हैं तो एक–2 कॉपी सभी को भेज देनी चाहिए। एक–एक कॉपी लाईब्रेरी में भी देनी चाहिए। खर्चा की तो बात ही नहीं। बाबा फ़राखदिल दिखाते रहते हैं। शिव बाबा का ख़ज़ाना बहुत भर जावेगा। फिर कोई से लेंगे भी नहीं। कहेंगे अभी अपने पास रखो। बच्चों की वृद्धि माना धन की वृद्धि। खर्चे की वृद्धि। फिर तंग नहीं होंगे। सावंलसाह की हुण्डी भी भरने वाला बैठा है। तुम खर्चा करते रहो। बाप कहते हैं कुछ भी छपाओ तो सभी सेन्टर्स पर एक–2 कॉपी भेज दो। हर्जा नहीं है। सेठ लोग होते हैं तो गुमासते खाता ले आते हैं। यह कम पड़ता है। यह पैसा नहीं देते हैं। कहेंगे, अच्छा हमारे खाते लिख दो। इनका मिटा दो। किसको तंग मत करो। पैसा रख कर क्यों करेंगे? घर तो नहीं ले जावेंगे। घर ले जाये तो परमात्मा की यज्ञ की चोरी हो जाये तोबा–तोबा। ऐसी बुद्धि सिकल किसकी न हो। परमपिता परमात्मा की यज्ञ की चोरी। करके उन जैसा महान पापात्मा कोई हो न सके। कितनी अधम गति हो जोवगी। बाप कहते हैं यह भी सभी का ड्रामा में पार्ट है। भल खावे–पीवे तुम जाकर राजाई करेंगे वह जाकर तुम्हारे नौकर बनेंगे। नौकर बिगर तुम्हारी राजाई कैसे चलेगी। वह ऐसी ही तुम्हारे सर्वेन्ट बनेंगे। राजाई ऐसी ही स्थापन होनी है। कल्प पहले भी ऐसी ही स्थापन हुई थी। बाप कहते हैं अगर अपना कल्याण करना चाहते हो तो अभी श्रीमत पर चलो। दैवीगुण भी धारण करो। क्रोध करना दैवीगुण नहीं है। वह आसुरी गुण हो जाता है। कोई क्रोध करे तो चुप कर देना चाहिए। रेसपॉन्स करना चाहिए। हरेक की चलन से समझ सकते हैं। अवगुण तो सभी में है। जब कोई क्रोध करते हैं तो उनकी सिकल ही टामी जैसी हो जाती है। मुख से बम चलाते हैं। अपना ही नुकसान करते हैं। पद भ्रष्ट हो जावेगा। समझ होनी चाहिए ना। तब ही बाबा कहते हैं जो भी पाप कर्म करते हो लिख कर दो। बाबा को बातने से माफ कर देंगे। बोझ हल्का हो जावेगा। जन्म–जन्मांतर से तुम विकार में जाने लगे हो। इस समय तुम कोई भी पाप कर्म करेंगे तो यह सौणा(सौ गुणा) बन जावेगा। बाप के आगे आये भ(भू)ल की तो सौड़ा(सौ गुणा) दण्ड पड़ जावेगा। किया और फिर बताया नहीं और ही वृद्धि होती जावेगी। और अपने ही सत्यानाश कर देते हैं। बाप तो समझावेंगे अपनी सत्यानाश न करो। बाप तुम बच्चों की बुद्धि सालम बनाने आये हैं। जानते हैं यह कैसे पद पावेंगे। वह भी 21 जन्मों की बात है। जो सर्विसएबुल

बच्चे हैं, स्वभाव बहुत मीठा होना चाहिए। कोई तो झट बाप को बतलाते हैं आज यह भूल हुई। बाबा खुश होते हैं। भगवान खुश हुआ और क्या चाहिए। यह तो बाप, टीचर, गुरू तीनों ही हैं। नहीं तो तीनों ही नाराज़ होंगे। तीनों को राज़ी करना है। कहा जाता है ना बड़ों को अदब से देखना चाहिए। गुस्ताखी नहीं। बाप कहते हैं मैं आता हूं तुमको पावन बनाने। फिर गुस्ताखी करते हो तो क्या हाल होगा? बाप बहुत ही प्यार से समझाते हैं। अपना अकल्याण क्यों करते हो? श्रीमत पर चलो। खान–पान तो सभी को मिलता ही है। शुरू में तुमको ऑलमाइटी बाबा ने छाछ और डोडा खिलाया था। देखूँ जबान कहां खिट–पिट तो नहीं करती है। छांछ और बाजरे का डोडा था। अभी को बाजरा दो तो माथा ही ख़राब हो जाये। बाबा ने सभी को खिलाया था। देखें मेरी डायरैक्शन पर चलते हैं? बाबा ने तो छोटेपन में ही डोडा और मक्खन बहुत खाया है। तुमको तो मक्ख़न नहीं मिल सकता था। अभी तो देखो बाप कहते हैं जो चाहो सो खा सकते हो ; परन्तु कोई आदम(त) न पड़ जावे। भोजन तो बहुत अच्छा मिलता है। गुड़ की चाय पिलाते हैं। बच्चे वृद्धि को पाते रहते हैं। बाबा कहेंगे दरकार नहीं है। शिवबाबा का भण्डारा भरपूर है। बहुत बच्चे कहते हैं बाबा मोटर भेज दें? बाबा लिखते हैं खिट–2 होगी। याद में रह न सकेंगे। राइट हैण्ड तो चले गये। सभी काम इन (बाबा) पर आकर पड़ा है। जब तक कोई ऐसा लायक निकले। मम्मा जैसी लायक अभी तब कोई थोड़े ही मिला है। यहां मिल ही नहीं सकता। उस गवर्मेन्ट में तो एक जाता है, दूसरा जगह भर लेते हैं। यहां तो ऐसे हो नहीं सकता। तो सभी ख़्यालात इन पर आ जाते हैं। सभी की सर्विस होनी चाहिए। कहां भी डिससर्विस नहीं होनी चाहिए। फिर भी ड्रामा ही ड्रामा कहा जाता है। जो कुछ हुआ, ड्रामा। चिंतन क्यों करें? जो होनी थी सो हो गई। बच्चों को भी ड्रामा पर खड़ा होना है। ड्रामा चलता रहता है, उनको देखते चलो। मोहजीत भी बनना है। अभी नई दुनियां में जाना है। पुराने बन्धन को भूलते जाओ। घर में रहो भले। बच्चे आदि भी सम्भालो, प्यार करो। दिल में एक बाप ही याद रहे। नये सम्बन्ध को ही याद करते रहो। गृहस्थ व्यवहार में रहते मामेकं याद करो तो वर्सा भी याद पड़ेगा। कितना प्यार से पढ़ाते हैं। हाथ में कोई लकड़ी आदि नहीं। कभी ऐसी कोई ख़राब अक्षर नहीं निकालते हैं। बच्चे तो बहुत गन्दे–2 अक्षर निकालते हैं। पीटते रहते हैं। बाप समझाते जाते इनका भी दोष नहीं है। .... चर्ये की बात दिल में नहीं किया जाता है। चर्ये अपन को कोई चर्या समझते थोड़े ही हैं। वह अपन को तो सबसे अच्छा समझते हैं। अभी तुम बाप के सामने आये हो तो भूलो मत। बाप दैवीगुण धारण कराते हैं। ऐसे नहीं कि सभी सम्पूर्ण बन जावेंगे। बहुत ही प्यार से समझाया जाता है। गुस्से से कोई को समझाने से वह भी गुस्सा में आ जावेगा। बहुत–2 मीठा बनो, जो देख कर सभी खुश हो जायें, वाह! यहां तो जैसे स्वर्ग में आये हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते रहते हैं। बाहर में जाने से किसको वैल्यु नही रहती। नये–2 को ले आते हैं। वह समझ नहीं सकते हैं; इसलिए बाहर जाना ही छोड़ दिया है। कौन बुकबसरों से बात करेंगे? सभी को बाप के आगे लाने का लायक भी बनाना है। ह(म) किसके पास जाते है? हम परमपिता परमात्मा बेहद का बाप से बेहद का वर्सा लेने जाते हैं। कब भी पतित नहीं बनेंगे। प्रतिज्ञा पक्की करें तब ही ले जाना चाहिए। इम्तहान होने से आगे ही अपने चलन को सुधारो। नहीं तो फिर पीछे बहुत पछताना पड़ेगा। रिज़ल्ट आउट तो ज़रूर होनी ही है। छी–2 आदतें मिटा दो। मुफ़्त में घाटा न खाना चाहिए; इसलिए खबरदार होशियार। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते। ओमशान्ति।

डायरैक्शनः– नर्कवासी के हो या स्वर्गवासी के हो, वाले पर्चे बाप दादा के डायरैक्शन से बम्बई में छपाया गया है जिसको चाहिए वह गामदेवी सेन्टर से मंगा सकते हैं। और चाहिए तो अपने–2 खर्चे से अपनी–2 भाषा में छपा सकते हैं। अच्छा ओमशान्ति।